MAKTABATUL MADINA INDIA

Jannat Ki Baharen (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 430
Weekly Booklet : 430

तक़रीबन 34 साल पहले का बयान

जन्नत की बहारें

जन्नती अश्या की ख़ूबसूरती 04
गन्दगी से पाक जगह 07
10 हज़ार ख़ादिम 07
सब से कम दर्जे का जन्नती 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

जन्नत की बहारें(1)

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 21 सफ़ह़ात का रिसाला : "जन्नत की बहारें" पढ़ या सुन ले उसे अपनी रह़मत से मां बाप और ख़ानदान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।

(جامع الاحادیث، 7/268، حدیث:22354)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत की बहारें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : बरोज़े क़ियामत तमाम लोग पुल सिरात़ पर जम्अ़ हो कर जहन्नम के इर्द गिर्द खड़े होंगे

1... येह बयान शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने 17 जुमादल ऊला 1413 हि. ब मुत़ाबिक़ 13 नवम्बर 1992 ई. को दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद में आ़शिक़ाने रसूल के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया था। जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के "शोबा बयानाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है।

और फिर अपने अपने आमाल के मुताबिक़ पुल सिरात़ से गुज़रेंगे, कुछ बिजली की त़रह़, कुछ हवा की त़रह़, कुछ परिन्दों की त़रह़, कुछ तेज़ रफ़्तार घोड़ों की त़रह़, कुछ उ़म्दा ऊंटों की त़रह़ और कुछ दौड़ने वाले आदमी की त़रह़। पुल सिरात़ से गुज़रने वाला सब से आख़िरी आदमी दोनों पांव के अंगूठों के बराबर तंग मक़ाम से गुज़रेगा, उस पर फिस्लन होगी और वोह तलवार की त़रह़ तेज़ भी होगा। फ़रिश्ते पुल सिरात़ के दोनों किनारों पर आग की कुन्डियां लिये मौजूद होंगे जिस से वोह लोगों को खींचते होंगे, कुछ लोग बच कर गुज़र जाएंगे, कुछ ज़ख़्मी हो कर जहन्नम में गिर पड़ेंगे और कुछ निकलने में कामयाब हो जाएंगे।

सब से आख़िरी शख़्स जो पुल सिरात़ से गुज़रने में कामयाब होगा उस के सामने जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाएगा, वोह जन्नत में अपने लिये नेमतों को न देखेगा तो वहीं बैठ जाएगा और अ़र्ज़ करेगा : ऐ **अल्लाह** ! तू मुझे यहीं बैठने की इजाज़त दे दे। जवाब मिलेगा : अगर तुम्हें इजाज़त मिल जाए तो तुम कुछ और सुवाल तो नहीं करोगे ? वोह अ़र्ज़ करेगा : **ऐ अल्लाह** ! मुझे तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! कोई सुवाल नहीं करूंगा चुनान्चे उसे वहां रहने की इजाज़त दे दी जाएगी। फिर उसे जन्नत की मन्ज़िलें नज़र आएंगी तो वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ **अल्लाह** ! मुझे वहां पहुंचा दे, इरशाद होगा : वहां पहुंच कर दोबारा तो कुछ नहीं मांगोगे ? अ़र्ज़ करेगा : ऐ **अल्लाह** ! मुझे तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! बिल्कुल नहीं, अब उसे उन मन्ज़िलों तक पहुंचा दिया जाएगा। वहां पहुंच कर उसे जन्नत की मज़ीद बहारें नज़र आएंगी तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में फिर अ़र्ज़ करेगा : ऐ **अल्लाह** ! मुझे वहां पहुंचा दे तो उसे वहां भी पहुंचा दिया जाएगा। वहां उसे जन्नत की मज़ीद नेमतें नज़र आएंगी लेकिन इस बार वोह सुवाल नहीं करेगा। उस से कहा जाएगा : अब तू

सुवाल क्यूं नहीं करता ? अ़र्ज़ करेगा : बहुत सुवालात कर लिये अब मुझे मज़ीद सुवाल करते हुए शर्म आती है । **अल्लाह** पाक की रह़मत जोश में आएगी और इरशाद होगा : हम ने तुझे जन्नत में पूरी दुन्या के बराबर बल्कि इस से भी दस गुना ज़ियादा अ़त़ा किया और येह शख़्स जन्नत में सब से कम दर्जे का होगा ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब येह वाक़िआ़ बयान फ़रमाते तो इतना मुस्कुराते कि आप की मुबारक दाढ़ें नज़र आने लगतीं । (تنبیہ الغافلین، ص42، حدیث:76 ماخوذاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जन्नत में **अल्लाह** पाक की ऐसी ऐसी नेमतें हैं जो न किसी आंख ने देखीं और न किसी कान ने सुनीं सिवाए उस के जिसे **अल्लाह** पाक ने दिखाईं । (مسلم، ص1162، حدیث:7133) जैसा कि नबियों के सरताज, साहि़बे मेराज صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शबे मेराज अपनी मुबारक आंखों से उन्हें मुलाह़ज़ा फ़रमाया । (بخاری، 2/416، حدیث:3342) बहरह़ाल जन्नत की नेमतें लाज़वाल हैं, उन की ह़क़ीक़त **अल्लाह** पाक ही जानता है और रिवायात व अह़ादीस में जन्नती नेमतों की जो मिसालें बयान की गईं हैं वोह सिर्फ़ समझाने के लिये हैं । जन्नतियों को जन्नत में क्या क्या इन्आ़मात मिलेंगे ? इस ह़वाले से सुनिये और जन्नती नेमतों को ह़ासिल करने के लिये ख़ूब नेक आमाल कीजिये चुनान्चे

जन्नती को 72 बीवियां दी जाएंगी

जन्नती को जन्नत में बहत्तर (72) बीवियां दी जाएंगी ।

(ابن ماجہ، 4/539، حدیث:4337)

जन्नती औ़रतों को कितने मर्द मिलेंगे ?

बाज़ औक़ात जाहिल या ज़रूरत से ज़ियादा पढ़े लिखे डेढ़ होशियार क़िस्म के लोग मज़हबी लोगों को परेशान करने के लिये इस त़रह़ का सुवाल करते हैं

कि जन्नत में मर्दों को 72 बीवियां मिलेंगी तो येह बताओ ! वहां औ़रतों को कितने मर्द मिलेंगे ?[1]

इस ह़वाले से अ़र्ज़ है कि येह सुवाल बहुत बड़ी जहालत और ज़हनी गन्दगी का नतीजा है, मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, दुन्या भर में शायद ही कोई ऐसी क़ौम हो जो इस बात को गवारा करे कि एक औ़रत के चन्द शौहर हों। जब दुन्या में कोई येह पसन्द नहीं करता कि एक औ़रत के लिये दो दो शौहर हों तो फिर जन्नत में कैसे हो सकता है कि एक औ़रत के लिये कई कई मर्द हों !

जन्नती औ़रत का हुस्नो जमाल

जन्नती औ़रत अगर दुन्या की त़रफ़ झांके तो सारी दुन्या नूर से भर जाए और ख़ुश्बू से मुअ़त्तर हो जाए और चांद और सूरज की रौशनी भी जाती रहे। जन्नती औ़रत का दुपट्टा दुन्या व माफ़ीहा (यानी दुन्या और जो कुछ इस में है उस) से बेहतर है। (بخاری،4/264،حدیث:6568) एक रिवायत में इस त़रह़ है : अगर जन्नत की हूर अपनी हथेली ज़मीनो आस्मान के दरमियान निकाले तो उस के हुस्न की वज्ह से ख़लाइक़ फ़ितने में पड़ जाएं और अगर वोह अपना दुपट्टा ज़ाहिर करे तो उस की ख़ूबसूरती के आगे सूरज ऐसा हो जाए जैसे सूरज के सामने चराग़।

(فتح الباری،12/378،تحت الحدیث:19ماخوذاً)

जन्नती अश्या की ख़ूबसूरती

अगर जन्नत की कोई चीज़ नाख़ुन के बराबर भी दुन्या में ज़ाहिर हो जाए तो ज़मीनो आस्मान उस से आरास्ता हो जाएं और अगर जन्नती कंगन ज़ाहिर हो जाए

---

1 ... औ़रतों को जन्नत में उन के वोह शौहर मिलेंगे जिन के निकाह़ में वोह थीं बशर्ते कि शौहर भी जन्नती हों। अगर किसी औ़रत का शौहर जन्नत में न जा सका तो वोह किसी और जन्नती मर्द के निकाह़ में दे दी जाएगी। इसी त़रह़ जो औ़रतें कुंवारी फ़ौत हुईं वोह भी जन्नत में किसी मर्द की ज़ौजिय्यत में चली जाएंगी।

तो वोह सूरज की रौशनी इस त़रह़ मिटा दे जिस त़रह़ सूरज सितारों की रौशनी मिटा देता है। (ترمذی،4/241،حدیث:2547ماخوذاً)

जन्नत की वुस्अ़त

जन्नत कितनी वसीअ़ है ? उस को **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं अलबत्ता इज्माली बयान येह है कि जन्नत में 100 दर्जे हैं और हर दो दर्जों में इतना फ़ासिला है जितना ज़मीन और आस्मान के दरमियान है। (ترمذی، 4/238،حدیث:2539) तिरमिज़ी शरीफ़ की एक और ह़दीसे पाक में है : अगर तमाम आ़लम जन्नत के एक दर्जे में जम्अ़ हों तो येह सब के लिये वसीअ़ है। (ترمذی،4/239،حدیث:2540)

जन्नती दरख़्त की वुस्अ़त

जन्नत में एक दरख़्त ऐसा है जिस के साए में 100 साल तक एक तेज़ रफ्तार घोड़े सुवार चलता रहे तब भी उस दरख़्त का साया ख़त्म न होगा। (مسلم،ص1163،حدیث:7138)

जन्नती दरवाज़ों की वुस्अ़त

जन्नत के दरवाज़े इतने वसीअ़ होंगे कि एक सिरे से घुड़ सुवार दौड़ना शुरूअ़ करे और 70 साल तक दौड़ता रहे तब वोह दूसरे सिरे पर पहुंचेगा। (مُسندِ امام احمد، 5/475،حدیث:16206) जन्नती दरवाज़े लाखों मील चौड़े होंगे लेकिन उस के बावुजूद जन्नत में जाने वालों का इतना रश होगा कि कन्धे से कन्धा छिल रहा होगा। (ترمذی،4/245،حدیث:2557مفہوماً)

जन्नत की आराइश व ज़ेबाइश

जन्नत में हीरे और जवाहिरात के मह़ल्लात हैं जो इतने साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ हैं कि बाहर से अन्दर और अन्दर से बाहर का नज़र आए। (مُسندِ امام احمد،2/583،حدیث:6626)

जन्नत की दीवारें सोने और चांदी की ईंटों और मुश्क के गारे से बनी हुई हैं, "एक ईंट सोने की, एक चांदी की, ज़मीन ज़ाफ़रान की, कंकरियों की जगह मोती और याक़ूत।" (ترمذی، 4/236، حدیث:2534)

जन्नते अ़दन की ईंट

जन्नते अ़दन की एक ईंट सफ़ेद मोती की है, एक याक़ूते सुर्ख़ की, एक ज़बरजदे सब्ज़ की और गारा मुश्क का है और घास की जगह ज़ाफ़रान है, कंकरियां मोती की और मिट्टी अ़म्बर की है। (الترغیب والترہیب، 4/283، حدیث:33)

जन्नती ख़ैमा

जन्नत में एक एक मोती का ख़ैमा होगा जिस की बुलन्दी साठ मील होगी। (مسلم، ص1166، حدیث:7158)

जन्नती दरिया और नहरें

जन्नत में चार दरिया हैं : एक पानी का, दूसरा दूध का, तीसरा शहद का और चौथा शराब का, फिर उन से नहरें निकलती हैं। (ترمذی، 4/257، حدیث:2580) वहां की नहरें ज़मीन खोद कर नहीं बहतीं बल्कि ज़मीन के ऊपर रवां हैं, नहरों का एक कनारा मोती का दूसरा याक़ूत का और नहरों की ज़मीन ख़ालिस मुश्क की। (موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 6/334، حدیث:68ملتقطاً) वहां की शराब दुन्या की सी नहीं कि जिस में बदबू, कड़वाहट और नशा होता है और पीने वाले बे अ़क़्ल हो कर आपे से बाहर हो जाते और बेहूदा बकते हैं बल्कि वोह शराब इन सब बातों से पाक और मुनज़्ज़ह है। (تفسیر ابن کثیر، پ26، محمد، تحت الآیۃ:15، 7/289ملتقطاً)

जन्नती खाने

जन्नतियों को जन्नत में हर क़िस्म के लज़ीज़ से लज़ीज़ खाने मिलेंगे और जिस खाने की ख़्वाहिश होगी वोह फ़ौरन हाज़िर हो जाएगा। (تفسیر ابن کثیر، پ24، فصلت،

(تحت الآیۃ:31، 7/162) अगर किसी परिन्दे पर नज़र पड़ी और उसे खाने की ख़्वाहिश हुई तो वोह परिन्दा भुना हुवा पेश हो जाएगा। (تفسیر در منثور، پ27، الواقعۃ، تحت الآیۃ:21، 8/11) अगर पानी पीने की ख़्वाहिश हुई तो कूज़े ख़ुद बख़ुद हाथ में आ जाएंगे और उन में ठीक अन्दाज़े के मुताबिक़ पानी, शहद और दूध होगा, जितनी ख़्वाहिश होगी उस से एक क़तरा न ज़ियादा होगा न कम, पीने के बाद वोह पियाले ख़ुद बख़ुद जहां से आए होंगे अपनी जगह वापस चले जाएंगे। (الترغیب والترہیب، 4/290، حدیث:66 ماخوذاً)

गन्दगी से पाक जगह

गन्दगी, नजासत, पेशाब, थूक, रींठ, कान और बदन का मैल वग़ैरा ऐसी चीज़ें जिन से इन्सान को घिन आती है जन्नत में बिल्कुल भी नहीं होंगी। शायद कोई सोचे कि खाना कैसे हज़म होगा ? तो उस की सूरत **अल्लाह** पाक ने जन्नत में येह रखी है कि एक फ़रहत बख़्श डकार आएगी और बदन से ख़ुश्बूदार पसीना निकलेगा जिस से सब खाना हज़म हो जाएगा, डकार और पसीने से मुश्क की ख़ुश्बू निकलेगी। (مسلم، ص1165، حدیث:7152 ملخصاً)

हर वक़्त तस्बीह़ व तक्बीर जारी रहेगी

हर वक़्त ज़बान से तस्बीह़ व तक्बीर ब क़स्दो बिला क़स्द मिस्ले सांस के (यानी सांस की त़रह़) जारी होगी। जिस त़रह़ हम दुन्या में कोई चीज़ पढ़ते पढ़ते थक कर चुप हो जाते हैं जन्नत में ऐसा नहीं होगा बल्कि वहां बिला तकल्लुफ़ तस्बीह़ और तह़मीद ज़बान पर जारी रहेगी। (مسلم، ص1165، حدیث:7152)

10 हज़ार ख़ादिम

हर जन्नती शख़्स के सिरहाने कम अज़ कम 10 हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे, हर ख़ादिम के एक हाथ में सोने और दूसरे हाथ में चांदी का पियाला होगा और हर पियाले में रंगारंग की नई नई नेमतें होंगी। (معجم اوسط، 5/380، حدیث:7674) और जितना भी

खाता जाएगा लज़्ज़त में कमी वाक़ेअ़ न होगी। दुन्यवी खानों की तरह नहीं कि पहले निवाले में लज़्ज़त ज़ियादा होती है फिर जूं जूं पेट भरना शुरूअ़ होता है मज़ा कम होता चला जाता है। नीज़ अगर कोई चीज़ चन्द रोज़ तक खाई जाए तो वोह अच्छी भी नहीं लगती बल्कि बाज़ चीज़ों को देख कर ही दिल भर जाता है जैसा कि मिठाई की दुकान के सामने से अगर कोई आ़म आदमी गुज़रे तो शायद उस के मुंह में पानी आ जाए लेकिन उस दुकान पर काम करने वालों को मिठाई से इतनी रग़बत नहीं होती क्यूंकि उसे देख देख कर उन का दिल भर चुका होता है।

हर निवाले में 70 ज़ाइक़े

जन्नती खाने के हर निवाले में 70 क़िस्म के ज़ाइक़े होंगे जब कि दुन्यवी खानों में इतने ज़ाइक़े नहीं होते अलबत्ता चन्द खानों को आपस में मिलाने से उन के ज़ाइक़े ज़रूर बदल जाते हैं मसलन बिरयानी और ज़र्दे को मिला कर खाने से एक तीसरा ज़ाइक़ा मह़सूस होगा जो न बिरयानी का होगा और न ही ज़र्दे का नीज़ दुन्यवी खाने एक दूसरे का ज़ाइक़ा छुपा लेते हैं और एक वक़्त में मुख़्तलिफ़ ज़ाइक़े जुदा जुदा मह़सूस भी नहीं होते जब कि जन्नती खानों के हर निवाले में 70 ज़ाइक़े जुदा जुदा मह़सूस होंगे और एक ज़ाइक़ा दूसरे को नहीं छुपाएगा।

जन्नतियों के लिबास और जवानी

जन्नतियों के लिबास पुराने नहीं होंगे और न जन्नतियों की जवानी ख़त्म होगी। (مسلم، ص1166، حدیث:7156)

जन्नती जन्नत में 30 साल के मालूम होंगे। (ترمذی،4/244، حدیث:2554) जन्नतियों की जवानी को कभी ज़वाल नहीं आएगा जब कि दुन्या में जवानी को ज़वाल है चुनान्चे जो शख़्स दुन्या में अभी 30 साल का है वोह अगले साल 31 साल का हो जाएगा और फिर उ़म्र बढ़ने के साथ साथ जवानी ढलती चली जाएगी

यहां तक कि एक वक़्त ऐसा भी आएगा कि बुढ़ापे की वज्ह से चेहरे पर झुर्रियां पड़ जाएंगी और कमर झुक जाएगी। याद रखिये ! जन्नत के लिये कोई मीआ़द मुक़र्रर नहीं कि 50 या 100 साल तक बाक़ी रहेगी और फिर फ़ना हो जाएगी बल्कि जन्नत हमेशा हमेशा के लिये है और जन्नती हमेशा उस में रहेंगे और उन की जवानी को कभी ज़वाल न आएगा।

जन्नतियों के रौशन चेहरे

सब से पहला गिरोह जो जन्नत में दाख़िल होगा उन के चेहरे चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ रौशन होंगे और दूसरा गिरोह जो जन्नत में जाएगा उन के चेहरे ऐसे होंगे जैसे रौशन सितारा। (بخاری،2/393،حدیث:3254)

जन्नत में बुग़्ज़ो कीना और ह़सद न होगा

जन्नती सब एक दिल होंगे, उन के दरमियान कोई बुग़्ज़ो कीना या ह़सद न होगा। (بخاری،2/393،حدیث:3254) दुन्या में बुग़्ज़ो कीना की वज्ह से एक शख़्स दूसरे शख़्स को अच्छा नहीं लगता जब कि जन्नत में ऐसा न होगा, वहां सब को एक दूसरे से मह़ब्बत होगी, कोई ह़सद न करेगा, आपस में लड़ाई, गाली गलोच और मार धाड़ का सिल्सिला न होगा। नीज़ ग़ुस्सा और चिड़चिड़ा पन वग़ैरा दुन्यवी अ़वारिज़ात (यानी परेशानियां) जन्नत में न होंगे।

जन्नत में न कोई ग़म होगा और न बीमारी

जन्नत में न कोई ग़म होगा और न कोई तक्लीफ़ और बीमारी जैसा कि दुन्या में किसी को पेट में दर्द रहता है तो कोई दमे का मरीज़ बन जाता है, कोई टीबी के मरज़ में मुब्तला होता है तो किसी को खांसी नहीं छोड़ती, कोई बेचारा कैन्सर का शिकार हो जाता है तो कोई किसी और मोहलिक मरज़ का, जन्नत में किसी क़िस्म का कोई मरज़, कोई ग़म और कोई तक्लीफ़ न होगी।

हूरे ईन (यानी बड़ी आंखों वाली हूर) का हुस्नो जमाल

जन्नतियों में से हर एक को हूरे ईन में से कम से कम दो बीबियां ऐसी मिलेंगी कि सत्तर सत्तर जोड़े पहने होंगी फिर भी उन के लिबासों और गोश्त के बाहर से उन की पिन्डलियों का मग़ज़ ऐसे दिखाई देगा जैसे सफ़ेद शीशे में शराबे सुर्ख़ दिखाई देती है। (بخاری،2/393،حدیث:3254۔ معجم کبیر،10/166،حدیث:10321) येह इस वज्ह से कि **अल्लाह** पाक ने उन्हें याक़ूत से तश्बीह दी और याक़ूत में सूराख़ कर के अगर डोरा डाला जाए तो ज़रूर बाहर से दिखाई देगा। (ترمذی،4/239،حدیث:2541) आदमी अपने चेहरे को उस के रुख़्सार में आईने से भी ज़ियादा साफ़ देखेगा और उस पर अदना दर्जे का जो मोती होगा वोह ऐसा होगा कि मशरिक़ से मग़रिब तक रौशन कर दे।(مسند امام احمد،4/150،حدیث:11715) एक रिवायत में है : अगर मर्द उस के शानों (यानी कन्धों) के बीच में पीछे की तरफ़ हाथ रखेगा तो उस के आगे से जिल्द, गोश्त और कपड़ों के बाहर से नज़र आएगा। (الترغیب والترہیب،4/298،حدیث:96)

जन्नती लिबास दुन्या में पहना जाए तो---

अगर जन्नती लिबास दुन्या में पहना जाए तो जो देखे वोह बेहोश हो जाए और लोगों की निगाहें उस को बरदाश्त न कर सकें।(الترغیب والترہیب،4/294،حدیث:84) उसे यूं समझिये कि जब सूरज अपनी पूरी आबो ताब से चमक रहा हो तो उस वक़्त जो उसे देखेगा उस की निगाहें चुन्धिया जाएंगी और सूरज की रौशनी को बरदाश्त नहीं कर पाएंगी। येह मिसाल सिर्फ़ समझाने के लिये है वरना **अल्लाह** पाक ही बेहतर जानता है कि जन्नती लिबास कैसा होगा जिसे आदमी न देख पाएगा।

हूर के लुआ़बे दहन की तासीर

अगर कोई हूरू समुन्दर में अपना लुआ़बे दहन यानी थूक डाल दे तो खारा समुन्दर मीठा हो जाए। अगर जन्नती औ़रत सात समुन्दरों में थूके तो वोह शहद से ज़ियादा मीठे हो जाएं। (الترغیب والترہیب،4/299،حدیث:98،99)

हूरों का गाना

जब कोई जन्नती जन्नत में जाएगा तो उस के सिरहाने और पाईंती (यानी पांव) की त़रफ़ दो हूरें निहायत अच्छी आवाज़ से गाएंगी मगर उन का गाना शैत़ानी मूसीक़ी और मज़ामीर वाला न होगा जैसा कि आज कल مَعَاذَاللہ गाया जाता है बल्कि वोह **अल्लाह** पाक की ह़म्दो सना बयान करेंगीं। (معجم کبیر،8/95،حدیث:7478ماخوذاً) वोह ऐसी ख़ुश इल्ह़ान (यानी अच्छी आवाज़ वाली) होंगी कि उन जैसी आवाज़ किसी ने कभी न सुनी होगी और वोह जो गाना गाएंगी उस का मज़्मून कुछ यूं है : हम हमेशा रहने वालियां हैं कभी न मरेंगी, हम चैन वालियां हैं कभी तक्लीफ़ में न पड़ेंगी, हम राज़ी हैं नाराज़ न होंगी और मुबारकबाद उस के लिये जो हमारा हुवा और हम उस की हुईं। (ترمذی،4/254،حدیث:2573)

सब जन्नती बेरीश होंगे

सर, पल्कों और भवों के सिवा जन्नती के बदन पर कहीं बाल न होंगे, सब जन्नती बेरीश होंगे, सुरमगीं आंखें और 30 बरस की उ़म्र के मालूम होंगे।

(ترمذی،4/244،حدیث:2554)

जन्नत में नींद नहीं

जन्नत में नींद नहीं कि नींद एक क़िस्म की मौत है और जन्नत में मौत नहीं।

(شعب الایمان،4/183،حدیث:4745)

नींद न होगी तो परेशानी का सामना करना पड़ेगा

हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में येह बात आए कि अगर जन्नत में नींद न होगी तो बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ेगा क्यूंकि नींद से सुकून ह़ासिल होता है, इस ह़वाले से अ़र्ज़ है कि जन्नतियों को **अल्लाह** पाक ऐसी फ़रह़तें और आसाइशें अ़त़ा फ़रमाएगा कि उन्हें वहां नींद की ज़रूरत ही न पड़ेगी।

देखिये ! ख़ुशी की वज्ह से भी नींद में कमी आती है जैसा कि रमज़ानुल मुबारक में लोग ख़ुशी के सबब रातें जाग कर गुज़ारते हैं और दिन में कुछ देर आराम कर के काम काज में मसरूफ़ हो जाते हैं, यूं ही शादी बियाह और मेलों झमेलों के मौक़ेअ़ पर ख़ुशी की वज्ह से नींद नहीं आती और लोग चौबीस चौबीस घन्टे जाग कर गुज़ारते हैं तो जब दुन्या की आ़रज़ी ख़ुशी का येह ह़ाल है कि नींद में कमी वाक़ेअ़ हो जाती है तो जन्नत की ख़ुशी का क्या आ़लम होगा ! वहां जन्नतियों को **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से ऐसी आसाइशें, फ़रह़तें और ख़ुशियां दी जाएंगी कि उन्हें नींद की ह़ाजत ही न रहेगी।

जिस त़रह़ ख़ुशी की वज्ह से नींद में कमी वाक़ेअ़ होती है इसी त़रह़ कारोबार के ख़ूब चमकने या किसी काम का सीज़न आने के बाइ़स भी नींद में नुमायां कमी आ जाती है जैसा कि रमज़ानुल मुबारक में दर्ज़ियों का सीज़न आता है तो वोह दिन रात कपड़े सिलाई करने में लगे होते हैं, उन्हें न नमाज़े तरावीह़ की फ़िक्र होती है न रोज़े का ख़याल, बस वोह इसी सोच में मगन होते हैं कि किसी त़रह़ हमारा टाइम बढ़ता चला जाए, रात दिन उन्हें छोटे मालूम होते हैं और काम की मश्ग़ूलियत उन की नींद उड़ा देती है। येह ह़क़ीक़त है कि दुन्या में आदमी मुसल्सल जाग कर काम नहीं कर सकता उसे 24 घन्टों में कुछ न कुछ नींद चाहिये होती है अलबत्ता बाज़ लोग ऐसे सख़्त जान होते हैं कि दो दो, तीन तीन बल्कि चार चार दिन तक भी जाग कर काम कर लेते हैं।

बहरह़ाल येह **अल्लाह** पाक का निज़ाम है कि जन्नत में नींद नहीं आएगी और नींद न आने की वज्ह से जन्नतियों को किसी क़िस्म की परेशानी भी न होगी।

अमीरे अहले सुन्नत की ख़्वाहिश

अमीरे अहले सुन्नत, मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नेकी की दावत आ़म करने के ह़वाले से अपनी कुढ़न का इज़्हार करते हुए इरशाद

फ़रमाते हैं : मेरा जी चाहता है कि काश ! मुझे नींद न आए और नींद न आने की वज्ह से मैं बीमार और सुस्त भी न पड़ूं और चौबीस घन्टे चुस्ती के साथ दीन का काम करता रहूं, ज़ाहिर है इस ख़्वाहिश का पूरा होना मुश्किल है क्यूंकि नींद आना भी **अल्लाह** पाक का एक निज़ाम है जिसे जारी रहना है।

ऐ आशिक़ाने रसूल ! दुन्या एक इम्तिहान गाह है इस लिये यहां तकालीफ़, परेशानियां, पाबन्दियां और तरह तरह के दीगर मसाइल हैं लेकिन जब हम इस इम्तिहान में कामयाब हो कर जन्नत में जाएंगे तो येह सारी परेशानियां, तकालीफ़ और पाबन्दियां ख़त्म हो जाएंगी। जन्नत **अल्लाह** पाक की क़ुदरत का ऐसा मज़हर है जहां इन्आमातो इकरामात की बारिशें होंगी और किसी क़िस्म की कोई परेशानी न होगी। जन्नत में न तो काफ़िर होंगे और न ही ऐसे लोग कि जिन से हमें लड़ना झगड़ना पड़े, वहां अम्न ही अम्न होगा।

सोने और चांदी के मिम्बर

जन्नत में सोने और चांदी के मिम्बर होंगे और जन्नतियों में से जो अदना जन्नती होगा वोह मुश्क और काफ़ूर के टीले पर बैठेगा और उन में अदना कोई नहीं, अपने गुमान में कुर्सी वालों को कुछ अपने से बढ़ कर न समझेंगे।(ترمذی،4/246،حدیث:2558) यानी येह नहीं समझेंगे कि फ़ुलां को तो नूर की कुर्सी मिली जब कि मैं काफ़ूर के टीले पर बैठा हूं, वहां किसी को किसी से ह़सद और ह़सरत न होगी कि उस के दिल में रंज की कैफ़िय्यत पैदा हो।

बिला तकल्लुफ़ दीदारे इलाही

जन्नत में **अल्लाह** पाक का दीदार इस त़रह साफ़ और बिला तकल्लुफ़ होगा जैसे लाखों आदमी सूरज और चांद को अपनी अपनी जगह से देखते हैं और किसी को पंजों के बल खड़े हो कर और नज़रें उठा उठा कर देखने की ज़रूरत नहीं पड़ती। **अल्लाह** पाक हर जन्नती पर तजल्ली फ़रमाएगा और किसी से फ़रमाएगा :

ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! तुझे याद है जिस दिन तू ने ऐसा ऐसा किया था ? यानी दुन्या के बाज़ गुनाह याद दिलाएगा, बन्दा अ़र्ज़ करेगा : ऐ परवरदिगार ! क्या तू ने मुझे बख़्श न दिया था ? फ़रमाएगा : हां ! मेरी मग़्फ़िरत की वुसअ़त ही की वज्ह से तू इस मर्तबे को पहुंचा, सब जन्नती इसी ह़ालत में होंगे कि बादल छा जाएगा और उन पर ऐसी ख़ुश्बू बरसाएगा कि इस त़रह़ की ख़ुश्बू उन्हों ने पहले कभी न सूंघी होगी। अब **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : उस इ़ज़्ज़त की त़रफ़ जाओ जो मैं ने तुम्हारे लिये तय्यार कर रखी है और जो चाहो ले लो। लोग जन्नत के एक बाज़ार में जाएंगे जिसे फ़िरिश्ते घेरे हुए होंगे, उस बाज़ार में ऐसी चीज़ें होंगी कि उन की मिस्ल न आंखों ने देखी, न कानों ने सुनी, न दिल पर उन का ख़याल गुज़रा, वहां ख़रीदो फ़रोख़्त नहीं होगी बल्कि जिसे जो चीज़ पसन्द आएगी वोह उस के साथ कर दी जाएगी। जन्नती आपस में मुलाक़ात करेंगे, छोटे मर्तबे वाला जब बड़े मर्तबे वाले को देखेगा तो उस का लिबास उस को पसन्द आएगा और फिर कुछ ही देर में उसे अपना लिबास उस बड़े मर्तबे वाले जन्नती के लिबास से अच्छा मालूम होने लग जाएगा और ऐसा इस लिये होगा कि जन्नत में कोई ग़म नहीं है। फिर जन्नती बाज़ार से वापस अपने अपने घरों पर आएंगे, वहां उन की बीवियां उन का इस्तिक़बाल करेंगीं और मुबारकबाद दे कर कहेंगीं : आप वापस हुए और आप का जमाल उस से बहुत बढ़ गया है कि जब आप हमारे पास से गए थे, वोह जवाब देंगे : **अल्लाह** पाक के ह़ुज़ूर हमें ह़ाज़िरी का शरफ़ मिला और हम दीदारे इलाही से फ़ैज़याब हुए तो ज़ाहिर है हमारे ह़ुस्न को बढ़ना ही था। (ترمذی،4/246،حدیث:2558ملتقطاً)

जन्नतियों की मुलाक़ात का त़रीक़ा

हमें यहां दुन्या में किसी से मुलाक़ात करनी हो तो बाज़ औक़ात बसों वग़ैरा का सफ़र इख़्तियार करना पड़ता है और बड़ी तक्लीफ़ें उठाना पड़ती हैं लेकिन जन्नतियों की आपस में मुलाक़ात का अन्दाज़ बड़ा प्यारा होगा और उस में किसी

क़िस्म की मशक़्क़त का सामना नहीं करना पड़ेगा, वोह अगर मुलाक़ात करना चाहेंगे तो एक का तख़्त दूसरे के पास चला जाएगा। (جمع الجوامع، 1/152، حدیث:993) और एक रिवायत में है उन के पास निहायत आला दर्जे की सुवारियां और घोड़े लाए जाएंगे जिन पर सुवार हो कर जहां चाहेंगे जाएंगे। (ترمذی، 4/244، حدیث:2553)

सब से कम दर्जे का जन्नती

सब से कम दर्जे का जो जन्नती होगा उस के बाग़ात, बीबियां, ख़ुद्दाम और तख़्त हज़ार बरस की मसाफ़त तक होंगे और उन में **अल्लाह** पाक के नज़्दीक सब से मुअ़ज़्ज़ज़ वोह होगा जो उस के दीदार से रोज़ाना सुब्हो शाम मुशर्रफ़ होगा।

(ترمذی، 4/248، حدیث:2562 ماخوذاً)

दीदारे इलाही से बढ़ कर कोई नेमत न होगी

जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो **अल्लाह** पाक उन से फ़रमाएगा : कुछ और चाहते हो जो मैं तुम को दूं ? वोह अ़र्ज़ करेंगे : ऐ **अल्लाह** ! तू ने हमारे मुंह रौशन किये, हमें जन्नत में दाख़िल किया और जहन्नम से नजात दी, उस वक़्त मख़्लूक़ से पर्दा हट जाएगा और दीदारे इलाही से बढ़ कर उन के लिये कोई नेमत न होगी। (مسلم، ص95، حدیث:449)

हौज़े कौसर

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन नेमतों के इ़लावा भी जन्नत में बेशुमार नेमतें हैं। वहां "कौसर (यानी नहर)" भी है बल्कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दो हौज़ होंगे एक पुलसिरात़ से पहले और दूसरा पुलसिरात़ के बाद, उन दोनों का नाम कौसर है। (التذکرۃ باحوال الموتی، ص291) क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने प्यासे ग़ुलामों को भर भर कर जाम अ़त़ा फ़रमाएंगे। (بخاری، 4/268، حدیث:6583 ماخوذاً) जो एक बार हौज़े कौसर से पी लेगा

वोह कभी प्यासा न होगा। (بخاری،4/267،حدیث:6579) वैसे तो हर नबी के लिये एक ह़ौज़ होगा जिस से उन की उम्मत सैराब होगी और वोह अपनी उम्मत की कसरत पर फ़ख़्र करेंगे लेकिन सब से ज़ियादा तादाद नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उम्मतियों की होगी चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : हर नबी के लिये एक ह़ौज़ है और वोह आपस में फ़ख़्र करते हैं कि किसी के ह़ौज़ पर ज़ियादा लोग आते हैं, मुझे उम्मीद है कि मेरे ह़ौज़ पर आने वालों की तादाद ज़ियादा है। (ترمذی،4/200،حدیث:2451ملتقطاً)

एक सुवाल और उस का जवाब

हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में येह सुवाल आए कि जन्नत में ह़ौज़े कौसर भी है और पाकीज़ा शराब भी, शहद भी है और पानी व दूध भी, जब जन्नत में प्यास ही न लगेगी तो जन्नती उन्हें क्यूं पिएंगे ?

उस का जवाब येह है कि जन्नती उन मशरूबात को लज़्ज़त के लिये पिएंगे और जितना पीते जाएंगे उन की लज़्ज़तें उतनी बढ़ती चली जाएंगी।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7/ 485 माख़ूज़न)

उसे मज़ीद इस मिसाल से समझिये कि जब हमें प्यास लगती है तो हम पानी पीते हैं और बाज़ औक़ात पानी पीने के बाद भी चाय भी पी लेते हैं, ऐसी सूरत में हम चाय प्यास बुझाने के लिये नहीं बल्कि लज़्ज़त के लिये पीते हैं। इसी त़रह़ हम शरबत, ठन्डी बोतल और लस्सी वग़ैरा मशरूबात भी लज़्ज़त के लिये पीते हैं।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई जन्नती नेमतें ऐसी नहीं कि उन्हें छोड़ दिया जाए। वोह शख़्स ख़ुश नसीब है जो जन्नत में दाख़िल किया जाएगा और वोह शख़्स बद नसीब है जो जन्नत से मह़रूम कर दिया जाएगा। देखिये ! जब जन्नत इतनी अ़ज़ीमुश्शान है और उस पर हमारा पुख़्ता यक़ीन भी है तो फिर हम उस के ह़ुसूल की कोशिश क्यूं नहीं करते ? दुन्या का भी येही दस्तूर है कि अगर कोई चीज़

हा़सिल करनी हो तो उस के लिये कोशिश करनी पड़ती है मसलन अगर नौकरी हा़सिल करनी हो तो उस के लिये बन्दा ख़ूब भाग दौड़ करता है, तक़रीबन 20 या 25 साल तक तालीम हा़सिल करता है ताकि अच्छी नौकरी मिल सके और अगर नौकरी से पहले इन्तिक़ाल कर जाए तो उस के मां बाप के नसीब की बात है क्यूंकि मां बाप तो येही चाहते हैं कि हमारा बच्चा डॉक्टर या इंजीनियर बने लेकिन बाज़ औक़ात तालीम के आख़िरी साल उस का इन्तिक़ाल हो जाता है। नीज़ सिर्फ़ डिग्री हा़सिल कर लेना नौकरी मिलने की ज़मानत नहीं, इस के लिये मज़ीद भाग दौड़ भी करना पड़ती है मसलन नौकरी के लिये इन्टरव्यू देना होता है और इन्टरव्यू में पास होने के लिये या तो सिफ़ारिश करवाना पड़ती है या फिर रिश्वत से काम लेना पड़ता है और बाज़ औक़ात किसी ऐसे इदारे में नौकरी हा़सिल करने के लिये कि जहां आमदनी और सहूलिय्यात ज़ियादा हों बन्दा ख़ूब तगो दौ करता है फिर कहीं जा कर उस को नौकरी मुयस्सर आती है।

तअ़ज्जुब है कि दुन्या की एक नौकरी की ख़ातिर बन्दा अपनी ज़िन्दगी का एक हिस्सा उस की जिद्दो जहद में गुज़ार देता है जब कि अ़ज़ीमुश्शान जन्नत जिस की नेमतों को न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और जिस के वुजूद पर उस का पुख़्ता यक़ीन है उसे पाने के लिये कोशिश नहीं करता। आह ! बन्दा कैसा नादान और बे अ़क़्ल है कि दुन्या की आ़रज़ी नेमतों को पाने के लिये ख़ूब मेह़नत करता है लेकिन जन्नत की हमेशा हमेशा रहने वाली नेमतों को पाने के लिये मेह़नत नहीं करता हा़लांकि उन्हें पाने के लिये इतनी कोशिश नहीं करना पड़ती और उन का हुसूल बहुत आसान है मसलन नमाज़ पढ़ने वाले के लिये जन्नत की बिशारतें हैं तो नमाज़ पढ़ने में क्या मुश्किल है ? नौकरी में आठ, दस बल्कि बारह बारह घन्टों तक ख़ून पसीना बहाना पड़ता है जब कि नमाज़ पढ़ने में दस, पन्दरह या ज़ियादा से

ज़ियादा बीस मिनट लगते हैं, अगर आप पांचों वक़्त की नमाज़ें मिला लें तो घन्टा या सवा घन्टा लगेगा और उस के बदले जन्नत मिलने का भरपूर मौक़अ़ है लेकिन अफ़्सोस येह आसान काम हम से नहीं हो पाता।

इस के बरअ़क्स दुन्या ह़ासिल करने के लिये बहुत ज़ियादा मेह़नत करना पड़ती है और इस राह में परेशानियां, आफ़तें, मुसीबतें और त़रह़ त़रह़ की आज़माइशें भी आती हैं, उस के बा वुजूद दुन्या के ह़ुसूल के लिये हर क़िस्म की मेह़नत और क़ुरबानी हमें गवारा है जब कि जन्नत जो कि नेमतों का घर है उसे ह़ासिल करने के लिये मामूली सी तक्लीफ़ भी हमें गवारा नहीं होती। ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक बुज़ुर्ग का क़ौल नक़्ल करते हुए फ़रमाते हैं : इन्सान जितना दौलत से प्यार करता है अगर इतना जन्नत से करता तो दोनों को पा लेता। (احياء العلوم، 4/245) लेकिन बद क़िस्मती से येह सिर्फ़ मालो दौलत से प्यार करता है, उसे प्लॉट से प्यार है, अपने दुन्यावी खेत और बाग़ात से प्यार है, अपने गोदाम और अपनी दुकान से प्यार है, अपने मकान से प्यार है लेकिन उसे जन्नत से जैसा प्यार होना चाहिये वैसा नहीं है। इन्सान जन्नती नेमतों के बारे में सुन कर سُبْحَانَ الله भी कहेगा, صَلِّ عَلٰى مُحَمَّد भी कहेगा, ख़ुश हो कर झूमेगा भी लेकिन अ़मली त़ौर पर जन्नत ह़ासिल करने के लिये तय्यार नहीं होगा।

ग़ौर कीजिये ! जब हम प्लॉट की तमन्ना करते हैं और फिर उसे ह़ासिल करने के लिये अ़मली त़ौर पर पूरी कोशिश करते हैं तो वोह हमें मिल जाता है, इसी त़रह़ नौकरी ह़ासिल करने के लिये अच्छी त़रह़ कोशिश करते हैं तो वोह भी मिल जाती है लेकिन जन्नत पाने के लिये हमारा जज़्बा गोया इस त़रह़ का होता है कि "जन्नत मिल जाए तो अच्छा है" या "जन्नत मिलनी चाहिये" या हम रस्मी त़ौर पर "जन्नत मिलने की दुआ़" मांगते हैं अ़मली इक़्दामात नहीं करते।

सुन्नतों को ज़िन्दा कीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स सुन्नतों पर अ़मल कर के उन्हें ज़िन्दा करे और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़क़ीक़ी मानों में मह़ब्बत करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه वोह जन्नत में सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ होगा लिहाज़ा ख़ूब ख़ूब सुन्नतों पर अ़मल कीजिये और चेहरे पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ भी सजा लीजिये कि इस की बड़ी फ़ज़ीलत है चुनान्चे मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो इस दौर में दाढ़ी रखेगा उसे 100 शहीदों का सवाब मिलेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/174 माख़ूज़न)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आज मुआ़शरे में जो दाढ़ी की बहारें नज़र आ रही हैं उस में आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी का बहुत बड़ा किरदार है वरना पहले इतने दाढ़ी वाले अफ़राद कहां नज़र आते थे ? येह प्यारी प्यारी सुन्नत दिन ब दिन मिटती चली जा रही थी।

आज कल मुआ़शरे में अपने किरदार की वज्ह से जहां सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुठ्ठी दाढ़ी रखना एक मुश्किल काम है वहां इ़मामा शरीफ़ सजाना भी एक बहुत दुश्वार काम है। अगर इ़मामा शरीफ़ सजाने की तरग़ीब दिलाई जाए तो बहुत से लोग येह कहते सुनाई देते हैं कि हम जिस इदारे में काम करते हैं वहां इ़मामा शरीफ़ सजाने पर हमारा मज़ाक़ उड़ाया जाएगा इस लिये हम इ़मामा शरीफ़ नहीं सजा सकते। ऐसा कहने वाले आ़म त़ौर पर किरदार के ह़वाले से कमज़ोर होते हैं मसलन छोटी छोटी बातों पर ज़बान दराज़ी करना, ख़्वाह मख़्वाह उलझना और बह़सें करना उन की आ़दत होती है, अगर ऐसे अफ़राद संजीदा हो जाएं तो कोई उन के इ़मामे का मज़ाक़ नहीं उड़ाएगा।

येह ह़क़ीक़त और तजरिबे की बात है कि जो संजीदा और नेक किरदार होता है उसे दाढ़ी शरीफ़ रखने या इ़मामा शरीफ़ सजाने पर कोई नहीं छेड़ता। बिलफ़र्ज़ अगर इ़मामा शरीफ़ सजाने की वज्ह से कोई मज़ाक़ उड़ाए तो बन्दा चुप चाप वहां से चला जाए, अगर दो तीन बार इस त़रह़ दरगुज़र से काम ले तो मज़ाक़ उड़ाने वाले ख़ुद ब ख़ुद ठीक हो जाएंगे।

एक शैत़ानी बहाना

बाज़ लोग इस लिये भी इ़मामा शरीफ़ नहीं सजाते कि ग़लत़ी हो जाने पर लोग उन की ज़ात के साथ साथ इ़मामा शरीफ़ को भी तन्क़ीद का निशाना बनाएंगे तो ऐसों के लिये अ़र्ज़ है कि आप अपना किरदार सुथरा रखिये, बाअ़मल मुसलमान बन कर दिखाइये اِنْ شَآءَاللّٰہ लोग आप से मुतअस्सिर होंगे और आप की पैरवी भी करेंगे, अगर आप के अ़मल में कोताही है, आप की ज़बान तेज़ चलती है, आप को ग़ुस्सा बहुत ज़ियादा आता है और आप में अख़्लाक़ नाम की कोई चीज़ नहीं तो फिर लोग न आप की दाढ़ी देखेंगे और न इ़मामा शरीफ़, आप की ज़ात को ख़ूब तन्क़ीद का निशाना बनाएंगे।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ रख लीजिये, सर पर इ़मामा शरीफ़ सजाइये और सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास पहनना शुरूअ़ कर दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ देखते ही देखते आप की शख़्सिय्यत में निखार आएगा और लोगों पर आप का रोब बह़ाल हो जाएगा। याद रखिये ! पाजामा और शलवार के पाइंचे टख़्नों से ऊपर होने चाहियें कि “जो कपड़ा तकब्बुर के बाइ़स टख़्नों से नीचे हो वोह जहन्नम की आग में है” (بخاری،4/46،حدیث:5787ماخوذاً)। लेकिन बदक़िस्मती से आज कल लोगों को उस की परवा नहीं है।

आह ! हम सिर्फ़ ज़बानी कलामी त़ौर पर जहन्नम से बचना चाहते हैं इस के लिये अ़मल की कोशिश नहीं करते अलबत्ता हम में से हर एक तंगदस्ती से बचने की भरपूर कोशिश करता है। देखिये ! जितना हम तंगदस्ती से डरते हैं अगर इतना जहन्नम से डरते तो दोनों से बच जाते जैसा कि ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बुज़ुर्ग के ह़वाले से नक़्ल करते हैं : लोग जितना तंगदस्ती से डरते हैं अगर उतना जहन्नम से डरते तो दोनों से बच जाते। (احیاء العلوم، 4/245)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जन्नत **अल्लाह** पाक की बहुत बड़ी नेमत है, हमें चाहिये कि उसे पाने की भरपूर कोशिश करें और ख़ुद को जहन्नम से बचाते हुए जन्नत के रास्ते पर चल पड़ें। **अल्लाह** पाक हमें बिला ह़िसाबो किताब दाख़िले जन्नत फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

अगले हफ़्ते का रिसाला

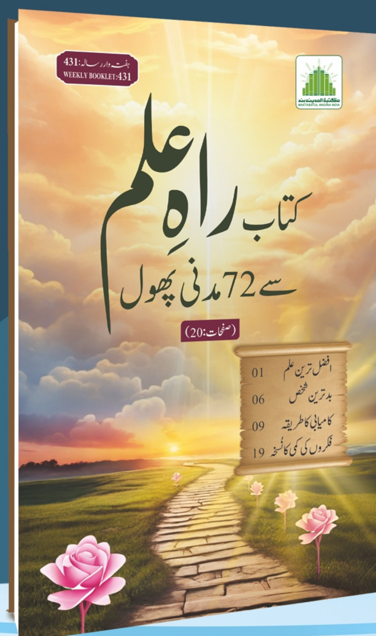

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel — Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025